महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

पीएच0डी0 (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–सार

''मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : एक अनुशीलन''

शोध–छात्र

प्रमोद कुमार सिंह

शोध निर्देशक

प्रो.दीपेंद्र सिंह पी.जाडेजा

हिन्दी विभाग   कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बड़ौदा, (गुजरात)

''मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : एक अनुशीलन''

शोध–सार

1. भूमिका

यह सर्वविदित है कि भारत की 70 प्रतिशत आबादी गाँव में निवास करती है। गाँव में निवास करने वाले इन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह बात सत्य है कि गाँव किसी पेड़ की जड़ की तरह होते हैं जो देश को चेतन बनाते हैं। गाँव जितना समर्थ होगा, देश उतना ही समृद्ध बनता है। किसी पेड़ की जड़ें जितनी जमीन के अन्दर विस्तार लेती है, उसकी शाखाएं, पत्ते, फूल, फल उतनी ही बड़ी मात्राएं में प्रकृति की सुन्दरता के साथ मानव के लिए लाभकारी सिद्ध होती है। सामर्थ्यवान देश के गाँव ऊर्जा के स्रोत होते हैं। यह ऊर्जा अन्न, जल खनिज किसी भी रूप में हो सकती है। गाँव सामाजिक जीवन की प्रथम पाठशाला होते हैं। रामदरश मिश्र जी ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए साक्षात्कार में कहा है कि वे जीवन के अधिकाँश वर्ष शहरों में रहे, मगर मन और अन्तर्रात्मा गाँव में हमेशा बनी रही। वे आज भी शहर की दुनिया से जुड़ नहीं पाये। गाँव सामाजिक दर्शनशास्त्र के केन्द्र होते हैं। युगों की यदि कल्पना की जाए तो ग्रामीण सभ्यता का इतिहास सर्वाधिक प्राचीन और समृद्ध है। ग्राम सभ्यता में भारत की साहित्यिक निधि समृद्धि हुई है। समाज ने साहित्य का विकास किया और साहित्य ने सामाजिक जीवन को समृद्ध किया। इस सम्बंध में कहा जा सकता है कि दोनों का ही अटूट सम्बंध रहा है। मैत्रेयी पुष्पा ने इन संवेगों को अपने साहित्य मे जीवित रखा, या हम कह सकते हैं कि यह उनके स्वभाव में ही था। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में उपन्यास हो या कहानी अथवा कथेतर साहित्य, सर्वत्र गाँव के दर्शन साहित्यिक तीर्थ की तरह होते ही हैं। यह बात साहित्यानुकूल है कि गाँव रचना की धुरी में हो तो कोई भी विधा पाठकोनुकूल बन ही जाती है। शहरों का आभामय जीवन साहित्यकार की रूचि का विषय नही रहा है। यही साहित्यिक रूचि गाँवों को सामाजिक पटल पर लाने का कार्य करती है। साहित्य ने इस कार्य को बखूबी निभाया भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रसिद्ध साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा

के कथेतर गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रामीण जीवन की चेतना को समग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मनुष्य अपने आप को अकेला महसूस करता है परन्तु उसके साथ एक अन्यान्य शक्ति भी कार्य करती है, जो उसे सदैव नयी बात सोचने को मजबूर करती है। अदृश्य और असीम शक्तियों से ही हम अभिभूत होते हैं और उसके अनुसार ही कार्य करते हैं क्योंकि ऐसी शक्तियॉ हमारे कार्य को प्रभावित करती है। किसी भी कार्य को करने के पूर्व एक कार्य योजना तैयार करना भी आवश्यक होता है। जिसके अनुरूप कार्य करके हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। शोध के लिये भी यही कार्य योजना लागू होती है।

मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी के प्रसिद्व साहित्यकार है इन्होंने अपनी लेखन में ग्रामीण भारत को साकार किया है, मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में ब्रज एंव बुन्देल दोनों संस्कृतियों का झलक दिखाई पड़ती है। मैत्रेयी पुष्पा को "रांगेयराघव" और "फणीश्वरनाथ रेणु" की श्रेणी का रचनाकार माना जाता है। इनके उपन्यासों में गॉव का मनुष्य अकेला नहीं है उसके साथ प्रकृति है, लोक देवता है, जातीय स्मृतियां है और पूरी लोक संस्कृति है उनके नारी पात्र अधिक सक्रिय, सजग और प्रभावी है। उनकी नारीचेतना मूकविद्रोह से चलकर मुखर सामूहिक संघर्ष की दिशा में अग्रसर हुई है और सबसे बड़ी बात यह है कि उसमें सच कहने का साहस है और उनकी क्रान्ति चेतना किसी विचारधारा के दायरे में कैद न होकर वह स्वयं अनुभव एवं सहानुभूति से प्रेरित है तथा उन्होंने उपन्यास में बने बनाये ढाचे को तोड़कर उसे शिल्पगत नवीनता प्रदान की है। इनकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश एवं मानवीय संवेदना देशकाल के बंधन तोड़कर सम्पूर्ण विश्व को एक होने का प्रतिनिधित्व करती है तथा नारी जाति की घुटन, पीड़ा तथा संघर्ष को चित्रित करते हुए अपने किरदार बड़े ही मनोयोग से बुने है।

समकालीन रचनाकारों में मैत्रेयी पुष्पा ने भी स्त्री तथा स्त्री–जीवन को आधार बनाकर साहित्य रचना की और बहुत कम समय में विशेष ख्याति भी प्राप्त की। आपने तीन दशकों में 30 रचनाएँ हिन्दी साहित्य–जगत् को देने का उल्लेखनीय कार्य किया है। निश्चित रूप से यह उनकी संवेदनशीलता, अनुभवों का संग्रह तथा लिखने की ललक ही है, जिससे उन्होंने इतने कम समय विशेष ख्याति अर्जित की है। इनका साहित्य मूलरूप

से स्त्री जीवन की समस्याओं और संघर्ष पर केन्द्रित है और इसमें स्त्री–चेतना के स्वर मुख्य रूप से उभर कर सामने आते हैं। लेकिन यह स्त्री–चेतना किसी नारेबाजी या आन्दोलन का परिणाम नहीं है अपितु यह चेतना गाँव की सीधी–साधी अनपढ़, कम–पढ़ी लिखी तथा शिक्षित शहरी महिला में जीवन' के अनावश्यक बंधनों की कसावट के परिणामस्वरूप उत्पन्न मुक्ति की छटपटाहट से अंकुरित होती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में अत्यंत सहज–सरल भाषा में जीवन के स्वाभाविक क्रियाकलापों के साथ जीवन जीती हुई स्त्री के लिए मुक्ति की आकांक्षा सर्वत्र परिलक्षित होती है। उनका कथा साहित्य स्त्री विषयक संवेदना के विविध आयामों से भरपूर है। उन्होंने कथा साहित्य के स्त्री पात्रों को ग्रामीण परिवेश में ढूँढा और उनके सुख–दुःख, संघर्ष, संवेदनाओं को पाठक तक ले गई। इनकी कथा भूमि ही नहीं, उनकी अनुभव और प्रेरणा भूमि भी गाँव ही है। यही ये विशेषताएँ हैं जिन्होंने मुझे मैत्रेयी पुष्पा के कथा–साहित्य पर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

2. पूर्व में किये गये शोध कार्य का संक्षिप्त वर्णन–

साहित्य में ग्राम शब्द उसके चेतन से जुड़ा है। ग्राम का वैदिक रूप 'जन' से सम्बद्ध है। 'जन', अर्थात लोगों का एक लघु समूह, जिसका सम्बन्ध परिवार से है। भारतीय वैदिक परम्परा में समाज के संगठित रूप को भी 'जन' कहा गया है। प्राचीन काल से ही ग्राम शब्द भारतीय समाज व्यवस्था का आधार भूत एकक रहा है। यहां के शास्त्रों और समाज का विकास आरोही श्रृंखला के रूप में हुआ है। जिसके सबसे आरम्भ में एक गृह अथवा कुल था। उसके ऊपर आगे चलकर ग्राम, विशु, जन तथा राष्ट्र एकक थे। विश्व साहित्य और समाज दर्शन के विभिन्न आयामों में 'ग्राम' शब्द की संज्ञा अद्यमन भारत के लिए ही प्रयुक्त होती है।

कोई भी साहित्यकार अपने लेखन के फलस्वरूप ख्याति तब ही प्राप्त करता है जब उसके लेखन पर आलोचकों की दृष्टि पड़ती है और साहित्य के सबल और दुर्बल पक्षों को लेकर चर्चा होती है। जीवन के पैंतालीस महत्वपूर्ण वर्ष पूर्ण करने के उपरान्त सन् 1990 से मैत्रेयी पुष्पा जी ने दृढ़ निश्चय के साथ लेखन प्रारम्भ किया। साक्षात्कार के दौरान बातचीत से पता चला कि उन्हें लेखन की प्रेरणा अपने एक सहपाठी लड़के के प्रेमपत्र से

मिली। **"मुझे एक पत्र मिला जो कविता में था। अगर वह एक साधारण प्रेम पत्र की भाँति होता तो शायद मुझे प्रेरणा नहीं मिलती, शायद क्या निश्चित ही नहीं मिलती। वह पत्र कविता में था इसलिए उसने मुझे आकर्षित किया। मुझे थोड़ा बहुत लिखने–पढ़ने की आदत थी, तो मुझे लगा यह लड़का लिख सकता है तो मैं क्यों नहीं लिख सकती? फिर वह मेरा एक प्रेरक ही बन गया।"**[1] शायद इसी प्रभाव से उन्होंने भी पहली रचना के रूप में कविता ही लिखी।

कथा साहित्य से सम्बन्धित इनकी पहली रचना कहानी थी, जो 1990 में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात वह निरन्तर लिखती रही। इनके उपन्यास तथा कहानी को लेकर अनेक समीक्षकों ने महत्वपूर्ण मूल्यांकन कार्य किया और अभिमत अभिव्यक्त किया है। सभी आलोचकों के मतों का उल्लेख शोध प्रबन्ध की सीमा को ध्यान में रखते हुए कर पाना सम्भव नहीं है तथापि कुछ आलोचकों के विचार यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे है।। डॉ0 गोपालराय लिखते हैं कि **"उपन्यासकार के रूप में मैत्रेयी की पहचान उनके 'इदन्नमम' (1994) नामक उपन्यास से निर्मित हुई। इस उपन्यास में एक विजन है, जो लेखिका के बुन्देखंडीय जीवन के प्रमाणिक और अन्तरंग अनुभव, पहाड़ी अंचल की धरती और बीहड़ पहाड़ के जीवन के सामाजिक यथार्थ तथा गहरी मानवीय संवेदना से सम्पन्न है।"**[2] 'चाक' के सम्बन्ध में उन्होंने अपना मत प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि **"चाक में जाट समाज की नैतिक संहिताओं का, रूढ़ियों में जकड़ी पुरानी पीढ़ी के क्रूरता भरे हठ का, जिसके तहत नारी संहिता का उल्लंघन करने वाली स्त्री से जीने का अधिकार छीन लेना, एक बहुत मामूली बात है, चित्रण किया गया है। इस समाज में किसी स्त्री की हत्या कर दिये जाने पर भी एक हल्की सी सुगबुगाहट के अतिरिक्त कोई विशेष हलचल नहीं होती, इसके प्रतिरोध में कोई खड़ा नहीं होता। इस क्रूर परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी नियति का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसमें एक चौंकाने वाली ताजगी है।[3]"** 'चाक' उपन्यास के सम्बन्ध में अरविन्द जैन ने लिखा है कि **"परिवार के भीतर बाहर सुरक्षा और संरक्षण की प्रक्रिया में औरतें, पुरुषों के हाथों जब बार–बार छली जाती हैं तो अपने–अपने मनचाहे या उपलब्ध रास्ते खुद चुनती हैं।**[4] राजेन्द्र यादव जो मैत्रेयी के साहित्यिक गुरु रहे हैं और जिन्होंने उनके समग्र लेखन को पढ़ा और समझा है, उन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं में

मैत्रेयी के कथा–साहित्य को लेकर विचार व्यक्त किये हैं। राजेन्द्र जी ने मैत्रेयी के कथा–साहित्य की प्रमुख विशेषताओं की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि **"स्त्री को कमर के ऊपर और नीचे बाँध देना ही पुरुष साजिश का शिकार होना है–यानी देवी और वैश्या का ध्रुवीकरण, मैत्रेयी की कथा नारियाँ इस मिथक को तोड़ती हैं और अपनी पूरी शारीरिकता के साथ जीने के संकल्प को ही अपना कथ्य बनाती हैं। उनकी गोमा, मन्दा, सारंग नैनी, जिजीविषा की ऐसी दबंग अभिव्यक्ति हैं जो श्लील–अश्लील, नैतिक–अनैतिक की धारणा में सहज ही कैंचुली की तरह उतर जाती है।"[5]** महिला कथाकार डॉ0 प्रभा खेतान ने मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का मूल्यांकन स्त्री विमर्श की दृष्टि से किया है, और इस दृष्टि से महत्ता भी स्वीकार की है।

प्रभा खेतान का कहना है कि–**"मैत्रेयी पुष्पा जब लिखती हैं तो वे अपने उपन्यास की नायिका के साथ एक हैं, संवाद सहज हैं, चित्रण सजीव है, इसलिए नहीं कि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य की लेखिका हैं बल्कि इसलिए कि वह स्त्री लेखिका हैं, कुसुमा भाभी जो कुछ कहती हैं या जितनी सहजता से विवाहिता होते हुए भी पराये पुरुष के साथ अपने सम्बन्ध को स्वीकारती हैं तो यह इसी का द्योतक है कि मानवीय सम्बन्धों में कुछ ऐसे शाश्वत मुद्दे हैं, जिन पर अब तक स्त्री खामोश रही है, हाँ डरते–डरते ही सही अब उसने बोलना शुरू किया है।"[6]** 'हंस' के दिसम्बर 2000 के अंक में प्रेम कुमार मणि ने मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' को उनकी सर्वप्रमुख औपन्यासिक सफलता माना है। उन्होंने अपना मत अभिव्यक्त करते हुए लिखा है कि **"मैत्रेयी जी ने इसे लिखकर अपने शेष सभी उपन्यासों को काफी छोटा कर दिया है। अपने ही नहीं बल्कि पूरे देश में लिखे बाकी उपन्यासों को भी छोटा कर दिया है।"[7]** मैत्रेयी के इस चर्चित उपन्यास की समीक्षा तो न जाने कितने आलोचकों ने की है और आज भी हो रही है। 'चाक' उपन्यास को लेकर अपना मत अभिव्यक्त करने वाले चार साहित्यकारों मैनेजर पाण्डेय, राजेन्द्र यादव, ज्ञानरंजन तथा परमानन्द श्रीवास्तव के मतों का उल्लेख उपन्यास के पिछले आवरण पृष्ठ पर अंकित है।

मैत्रेयी की कहानियाँ यद्यपि संख्यात्मक रूप से कम हैं, किन्तु कथ्य–शिल्प, स्त्री विमर्श एवं आँचलिकता की दृष्टि से इनका विशेष स्थान है। 'समकालीन साहित्य चिन्तन' ग्रन्थ में

डॉ0 रामदरश मिश्र तथा डॉ0 महीप सिंह का एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने मैत्रेयी के कहानी साहित्य का मूल्यांकन नपे–तुले शब्दों में किया है। उनका कहना है कि **"आज कोई भी कथा–पत्रिका, कथा संकल्प बिना मैत्रेयी पुष्पा के रचनात्मक योगदान के अधूरा है, और आज की कहानी का कोई सर्वेक्षण उनके जिक्र के बिना अपूर्ण।"**[8]

वीरेन्द्र यादव ने स्त्री विमर्श की दृष्टि से उनकी कहानियों की समीक्षा करने का प्रयास किया है और माना है कि **"मैत्रेयी अपनी कहानियों में प्रतिरोधी चेतना की मुखर अभिव्यक्ति द्वारा स्वतंत्र नारी अस्मिता की जमीन तैयार करती है। वैधव्य की यातना से गुजरती 'उज्रदारी' कहानी की शान्ति द्वारा 'लाज–लिहाज और मरजाद को त्यागकर स्वतंत्र रास्ते की तलाश नारी की प्रतिरोधी चेतना की स्वाभाविक परिणति है।"**[9] मैत्रेयी के साहित्य की समीक्षा करने वालों ने उनके कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श की अभिव्यक्ति तलाशने में अधिक रुचि ली है। अजित कुमार ने 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह की समस्त कहानियों पर एक समग्रतः सन्तुलित वक्तव्य देते हुए लिखा है कि **"ये कहानियाँ केवल अंचल विशेष की भाषा पर टिकी, लटके–झटके पर आधारित चरित्र–विशेष या स्थिति विशेष का निरूपण करने वाली कहानियाँ नहीं हैं, इनमें बदलते रिश्तों और बदलती सामाजिक वास्तविकताओं के साथ स्थिर मानवीय मूल्यों और बहुमूल्य संस्कारों का ताना–बाना गूँथने का सचेत प्रयास झलकता है।"**[10] 20वीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में प्रचुर मात्रा में कथा–साहित्य लिखा गया है, जिसमें स्त्री कथाकारों की संख्या सर्वाधिक है। समीक्षकों ने स्त्री विमर्श की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा के कथासाहित्य की खूब चीर–फाड़ की है और इनमें व्यक्त यथार्थ को उजागर करने में सफलता प्राप्त की है। आलोचकों की संख्या बहुत अधिक है, लेकिन यहाँ गिने–चुने आलोचकों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यथासम्भव संक्षेप में अपनी बात रखने का प्रयास किया गया है।

3. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य एवं महत्व–

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और इस महान कार्य में लगे गाँव देश की आत्मा के समान है। रीढ़ और आत्मा के बिना जिस प्रकार शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार गाँव के बिना देश की कल्पना निरर्थक है। प्राचीन सभ्यता हो या संस्कृति उसे जानने व समझने के लिए ग्राम जीवन के अध्ययन की आवश्यकता होती है। बदलते

सामाजिक परिवेश का स्वरूप क्या होगा? सामाजिक, भौगोलिक और आर्थिक ढ़ाँचा इस तरह बदलता रहा तो भावी ग्राम कौन–सा रूप धारण करेगा? इन सभी बातों को जानने के लिए अध्ययन की आवश्यकता होती है। साहित्य इसका स्रोत है, जिसके प्रलेखकीय स्रोतों में ग्रामीण जीवन और उसके स्वरूप का व्यापक तथा गहन चिंतन हुआ है।

हिन्दी साहित्य के विविध कालों में काव्य, उपन्यास, कहानी आदि में ग्रामीण दर्शन का पर्याप्त वर्णन मिलता है। यदि हम साहित्य के वैदिक काल को देखें तो ग्रामीण जीवन की विषद व्याख्या वैदिक ग्रंथों में की गयी है। अन्य कोई साधन हमें वैदिक काल की प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं कराते। कृषि से सम्बंधित विभिन्न कार्यों का उल्लेख रामायण और महाभारत में देखने को मिलता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में देंखें तो भारवि और माघ ने भी अपने साहित्य में गाँवों को स्थान दिया है। आधुनिक काल में भी साहित्य की हर विधा में ग्रामीण जीवन सर्वाधिक लोकप्रिय बनकर उभरा है। गाँवों से निकलने वाली श्रेष्ठ प्रतिभाएं राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर छाकर ग्राम दर्शन और संस्कृति का अमर संदेश देती रही हैं। चूँकि भारतीय समाज में गाँव केन्द्रीय भमिका में है। दुनिया के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों का यदि अवलोकन करें तो पाते हैं कि रोम जैसी विकसित और मेसोपोटामिया जैसी विस्तृत बड़ी से बड़ी सभ्यताएं समय के साथ नष्ट हो गयीं। मगर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति न केवल अक्षुण्य रही बल्कि देश–दुनिया के सामने अपनी मजबूत ग्रामीण विरासत के कारण अडिग भी रही। जब भारत के शहर डगमगाने लगे उस समय यहां के गाँव अपनी सांस्कृतिक जड़ों के कारण गाँव पल्लवित और पुष्पित होते रहे। ग्रामीण जीवन दर्शन, उसका अलबेलापन, स्थायित्व और निश्छल स्वभाव को समझने के लिए साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से समृद्ध किया। अलग–अलग युगों में विभिन्न विधाओं के माध्यम से समकालीन समाज, सामाजिक संदर्भ और परिस्थितियाँ, चाहे आर्थिक हों या धार्मिक अथवा राजनैतिक हों या सामाजिक आदि सभी विषयों पर अपनी वाणी और लेखनी से विभिन्न रचनाओं में उकेर कर उसे जीवंत बनाया। साहित्य के इन सरोकारों ने न केवल इस ग्राम निधि को समृद्ध किया बल्कि वास्तविक यथार्थ को समाज के सामने तारांकित किया। इसके कारण बहुमूल्य ग्राम निधि का सर्वग्राही और सर्वस्पर्शी चित्र भी प्रस्तुत किया। साहित्य ने समाज में सर्वकालिक रूप से

सर्वव्यापक प्रयास कर समाज को हमेशा मार्ग से भटकने नहीं दिया दर्शन की मर्मस्पर्शी कथा देकर उसे बिखरने नहीं दिया। गाँव शास्वत है, उसका आत्म–निर्भर स्वरूप देश को सशक्त है।

शोध का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य यह है कि वर्तमान में जो शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण गाँव के जीवन को आशातीत संकट में आने से बचाने के लिए किए गये मैत्रेयी पुष्पा के समतामूलक साहित्यिक प्रयासों को उजागर करना, समाज में चेतना लाने का प्रयास करना है। गाँव का अस्तित्व किसी भी देश के लिए उसका स्वयं की नींव है। उस पर होने वाला प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रहार प्रकृति पर प्रहार है। प्रकृति के खिलाफ जाने वाले देश की नींव कमजोर पड़ती है। यह बात यहां ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन मनीषियों ने सभी क्षेत्रों में काफी उन्नति की–बड़े–बड़े शहर भी बसे, परन्तु उन्होंने ग्राम जीवन के आदर्श को बचाए रखने के लिए उसकी प्रकृति कभी छेड़–छाड़ नही की। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण परिवेश समाज, मध्यवर्गीय समाज, साम्प्रदायिकता वर्ग संघर्ष, मानवीय संवेदना, शहरी समाज एवं नारी चेतना आदि का गहरी पड़ताल करता है। उनके कथा साहित्य के अध्ययन का यह उद्धेश्य है कि वह साहित्य के एक भिन्न शैली और भिन्न शोधपरक दृष्टि से लेकर आता है और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण परिवेश, मध्यवर्ग समाज एवं नारी चेतना का यथार्थ उभरकर सामने आया है यह यथार्थ समाज को बहुत गहराई से समझा है तथा समाज की विडम्बनाओं को उजागर किया है। साहित्य में समालोचना ऐसा कर्म कर रहा है जिनसे साहित्यकारों और उसके द्वारा रचित साहित्य को समझने और उसका महत्व उद्‌घाटित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैत्रेयी पुष्पा जी की ग्रामीण चेतना के अविस्मरणीय और व्यापक कार्य को साहित्यिक पटल पर लाना ही शोध का प्रथम उद्‌देश्य है।

4. शोध प्रविधि या पद्धति–

प्रस्तावित शोध में सामाजिक, राजनीतिक, वर्गसंघर्ष, साम्प्रदायिकता, मनौवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना के विभिन्न पक्षों के माध्यम से विवेचित एवं विश्लेषित किया गया

है। देशकाल, वातावरण एवं साहित्य समाज के आधार पर पात्रों की भाषा का विश्लेषण किया गया है।

5. प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रतिफलन (अध्याय विभाजन) –

अध्याय एक–मैत्रेयीपुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क–जीवनवृत्त

1. भूमिका
2. जन्म तथा जीवन परिचय
3. पारिवारिक पृष्ठभूमि
4. शिक्षा
5. वैवाहिक जीवन एवं जीवन दर्शन
6. साहित्यिक प्रेरणा
7. पुरस्कार एवं सम्मान

ख–कृतित्व

1. रूचियॉ या प्रवृत्तियॉ
2. मैत्रेयी पुष्पा का रचना संसार
3. उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन
4. कहानियों का संक्षिप्त वर्णन
5. आत्मकथा
6. नाटक
7. कविता संग्रह
8. रीपोर्ताज
9. आलेख
10. टेलीफिल्म

निष्कर्ष

अध्याय दोः हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना

1. ग्रामीण चेतना से तात्पर्य
2. हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण चेतना
3. हिन्दी कहानियों में ग्रामीण चेतना

निष्कर्ष

अध्याय तीनः (अ) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त भारतीय ग्रामीण समाज

क–भारतीय ग्रामीण समाज की वर्गीय स्थिति

1. उच्च वर्ग एवं उच्च वर्गीय मनोवृत्ति
2. मध्यवर्ग एवं मध्यवर्गीय मनोवृत्ति
3. निम्नवर्ग और निम्नवर्गीय मनोवृत्ति

ख–भारतीय ग्रामीण समाज में नारी की स्थिति

1. प्रेम व दाम्पत्य जीवन
   1. अनमेल विवाह एवं बाल विवाह
   2. विधवा समस्या
   3. वासना का शिकार एवं विद्रोही स्वभाव
   4. सास–बहू
   5. माता–पिता पुत्र
   6. प्रेमी–प्रमिका
   7. ग्रामीण समाज में पर्दाप्रथा
   8. दहेज प्रथा

(ब) मैत्रेयीपुष्पा की कहानियों में अभिव्यक्त भारतीय ग्रामीण समाज

क–भारतीय ग्रामीण समाज की वर्गीय स्थिति

1. उच्च वर्ग एवं उच्चवर्गीय मनोवृत्ति
2. मध्यवर्ग एवं मध्यवर्गीय मनोवृत्ति
3. निम्नवर्ग और निम्नवर्गीय मनोवृत्ति

ख–भारतीय ग्रामीण समाज में नारी की स्थिति

1. प्रेम व दाम्पत्य जीवन

2. अनमेल विवाह एवं बाल विवाह
3. विधवा समस्या
4. वासना का शिकार एवं विद्रोही स्वभाव
5. सास–बहू
6. माता–पिता पुत्र
7. प्रेमी–प्रेमिका
8. ग्रामीण समाज में पर्दाप्रथा
9. दहेज प्रथा

निष्कर्ष

अध्याय चौथाः मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

(क) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

1. मैत्रेयीपुष्पा के समय आर्थिक परिस्थितियाँ
2. शोषण में सहायक सरकारी कर्मचारी एवं अधिकारी
3. शोषक वर्ग का क्रूर अत्याचार
4. ऋण समस्या और ग्रामीण जीवन
5. मैत्रेयी पुष्पा के समकालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ
6. मैत्रेयीपुष्पा और गाँधीवाद
7. गाँव में सवर्णों की राजनीति
8. पंचायत व्यवस्था
9. भारतीय संस्कृति एवं ग्रामीण जीवन
10. नारी जीवन का आदर्श और ग्रामीण जीवन
11. ग्रामीण जीवन और शिक्षा
12. ग्रामीण जीवन का रहन–सहन और स्वास्थ्य व्यवस्था

(ख) मैत्रेयीपुष्पा की कहानियों में ग्रामीण जीवन का आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति–

1. मैत्रेयीपुष्पा के समय आर्थिक परिस्थितियाँ
2. शोषण में सहायक सरकारी कर्मचारी एवं अधिकारी
3. शोषक वर्ग का क्रूर अत्याचार
4. ऋण समस्या और ग्रामीण जीवन
5. मैत्रेयीपुष्पा के समकालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ
6. मैत्रेयीपुष्पा और गाँधीवाद
7. गाँव में सवर्णों की राजनीति
8. पंचायत व्यवस्था
9. भारतीय संस्कृति एवं ग्रामीण जीवन
10. नारी जीवन का आदर्श और ग्रामीण जीवन
11. ग्रामीण जीवन और शिक्षा
12. ग्रामीण जीवन का रहन–सहन और स्वास्थ्य व्यवस्था
13. निष्कर्ष

अध्याय पाँच : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों और कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्याऍ

(क) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ

1. वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याएँ
2. सामाजिक समस्याएँ
3. आर्थिक समस्याएँ
4. शैक्षणिक समस्याएँ
5. यौन शोषण की समस्याएँ
6. दहेज समस्या/बेमेल विवाह
7. विधवा एवं परित्यवता समस्या
8. सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार की समस्या
9. ग्रामीण एवं महानगरी जीवन की समस्याएँ

10. जातिगत एवं वर्गगत समस्याएँ

11. धार्मिक रूढ़ियों तथा प्रथाओं अंधविश्वासों की समस्याएँ

(ख) मैत्रेयीपुष्पा की कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ

1. वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याएँ
2. सामाजिक समस्याएँ
3. आर्थिक समस्याएँ
4. शैक्षणिक समस्याएँ
5. यौन शोषण की समस्याएँ
6. दहेज समस्या/बेमेल विवाह
7. विधवा एवं परित्यवता समस्या
8. सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार की समस्या
9. ग्रामीण एवं महानगरी जीवन की समस्याएँ
10. जातिगत एवं वर्गगत समस्याएँ
11. धार्मिक रूढ़ियों तथा प्रथाओं अंधविश्वासों की समस्याएँ
12. निष्कर्ष

अध्याय छः: मैत्रेयीपुष्पा के कथा साहित्य का शिल्प विधान (उपन्यास एवं कहानियों के संदर्भ में)

1. भाषिक वैशिष्टय
2. शब्द विन्यास
3. पद विन्यास
4. मुहावरों, कहावतों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग
5. पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण
6. प्रतीक विधान
7. बिम्ब विधान
8. औपन्यासिक संरचना
9. मैत्रेयीपुष्पा के कथा साहित्य का समग्र प्रभाव

10. मैत्रेयीपुष्पा के कथा साहित्य का समकालीन हिन्दी कथा साहित्य को अवदान

निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रकाषित शोध पत्र

1. **"बदलते परिवेष में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्ष के विविध आयाम" {दृष्टिकोण, संपादक–प्रो.प्रसून दत्त सिंह, वर्ष:13 अंकः 1 जनवरी–फरवरी (2021)** IISN 0975-119X, पृ0 1140-1145}
2. **"हिन्दी साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का षिल्प वैषिष्ट्य"** Wesleyan Journal of Research, **संपादक- अंक 75**(Volume- 13), **मार्च– 2021** ISSN: 0975-1386 **पृ0** 95–110}

6. अध्याय का संक्षिप्त सारांश–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध **''मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : एक अनुशीलन''** की पूर्णता हेतु शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त कर मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना के सन्दर्भ का अध्ययन किया है।

शोध–प्रबंध का प्रथम अध्याय **"मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** के अन्तर्गत कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा के योगदान को बताया गया है। व्यक्ति परिचय के अंतर्गत उनके जन्म से लेकर अब तक के जीवन को रेखांकित किया है, जिसमें उनके जन्म, नाम, जन्मस्थान, माता–पिता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, परिवार, बच्चों, साहित्यिक परिवेश, पुरस्कार व सम्मान आदि का विवेचन है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनके आन्तरिक एवं बाह्य पक्षों को अंकित करते हुए, उनके जीवन संघर्ष, साहित्यिक यात्रा, एवं उनके द्वारा प्राप्त समस्त पुरस्कारों को प्रस्तुत किया गया है।

शोध–प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय **"हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना के अन्तर्गत"** चेतना समझने की वस्तु है उसे परिभाषित करना सरल नहीं है। व्यक्ति चेतना कारण ही क्रियाशील रहता है। चेतना रूप अत्यन्त सूक्ष्म और जटिल है। इसकी व्याख्या नियंत्रित शब्दों में नहीं की जा सकती है। फिर भी विचारकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से चेतना

की व्याख्या करने का प्रयास किया है। 'चेतना' शब्द 'चित' से सम्बन्धित है। संस्कृत आचार्यों ने चेतना को बुद्धि–ज्ञान, जीवन–शक्ति, भावना या विचार के अर्थ में ग्रहण किया है। धीः, मति, चित, सवित्त, प्रतिपत, ज्ञाप्ति, सत्व एवं जीवंत के अर्थ में भी चेतना शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'चैतन्य लक्षणा जीवः' अर्थात् जीवन का लक्षण ही चेतना है।

चेतना और मनुष्य का मौलिक संबंध है। चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को सजीव बनाती है और चरित्र उसका वह संपूर्ण संगठन है। किसी मनुष्य की चेतना और चरित्र केवल उसी की व्यक्तिगत संपति नहीं होते। ये बहुत दिनों के सामाजिक प्रक्रम के परिणाम होते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं के वंशानुक्रम प्रस्तुत करता है। वह विशेष प्रकार के संस्कार पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाता है। वह इतिहास को भी स्वयं में निरूपित करता है क्योंकि उसने विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को जीवन में पाया है।

चेतना का हमारी जीवन–शैली में बहुत महत्व है। मनोविज्ञान की दृष्टि में चेतना मानव में उपस्थित वह तत्त्व है जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषयों पर चिंतन करते हैं। इसी के कारण हमें सुख–दुःख की अनुभूति होती है। मानव चेतना की तीन विशेषताएँ हैं। वह ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक हातेी है। चेतना ही सभी पदार्थों की जड़–चतेन, शरीर–मन, निर्जीव–सजीव, मस्तिष्क–स्नायु आदि को बनाती है। उनका रूप निरूपित करती है। चेतना के विषय में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क में होने वाली क्रियाओं अर्थात् कुछ नाड़ियों के स्पंदन का परिणाम ही चेतना है। यह अपने में स्वतन्त्र कोई अन्य तत्व नहीं है। शरीर चेतना के कार्य करने का यंत्र मात्र है, जिसे वह कभी उपयोग में लाती है और कभी नहीं लाती है। परन्तु यदि यंत्र बिगड़ जाए या टूट जाए तो चेतना अपने कामों के लिए अपंग हो जाती है। चेतना के बिना सुना व देखा नहीं जा सकता है।

शोध–प्रबन्ध के तृतीय अध्याय **"मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में अभिवक्त भारतीय ग्रामीण समाज"** के अन्तर्गत मैत्रेयी पुष्पा ने मध्य वर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसमें नयी दिशा भी दी है। ये स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष और द्वंद्व के प्रति पूर्ण रूप से

सजग हैं। इस सृष्टि का शाश्वत सत्य है। प्रकृति में विभिन्न स्तरों पर यह संघर्ष निरंतर चलता रहता है।

कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक समस्याओं को नवीन दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने उच्च, मध्यम और निम्न वर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसमें नयी दिशा भी दी है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यासों एवं कहानियों में विद्रोह के साथ सामन्तीय संस्कारों, आर्थिक, पारिवारिक संबंधों में नवीन वैचारिक दृष्टि को अपनाया है। प्रस्तुत अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में लोक संस्कृति, संस्कार आदि का अंकन भी किया गया है।

शोध–प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय **"मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति"** के अन्तर्गत मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार आज का युग गद्य का युग है। यह वैज्ञानिक प्रभाव के कारण है वर्तमान युग में लेखक और पाठक दोनों के लिए कथा साहित्य अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। आज के जीवन के भावसत्य को अपनी समग्रता में सभी स्तरों और आयामों, व्यापकता और गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास एवं कहानियों से अधिक समर्थ माध्यम दूसरा नहीं। वस्तु का यथातथ्य चित्रण इसी विधा में संभव होता है। सत्य का वास्तविक अंदेशा उपन्यास के अतरिक्त किसी माध्यम द्वारा संभव नहीं। इस प्रकार वर्तमान समाज के वास्तविक जीवन की चित्रशाला उपन्यास एवं कहानियां ही है। प्रस्तुत अध्याय में समकालीन हिन्दी उपन्यास की साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी ग्रामीण भावाभिव्यक्ति तथा विभिन्न ग्रामीण समस्याओं के चित्रण के लिए उपन्यास एवं कहानियों जैसे सशक्त विद्या का चयन किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में जिन ग्रामीण समस्याओं को अंकित किया है, वे निम्न हैं–आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या, सामाजिक समस्या तथा सांस्कृतिक समस्या। उक्त अध्याय में लेखिका ने जीवन से सम्बन्धित इन सारी समस्याओं का उल्लेख अपने

उपन्यास एवं कहानियों में किया है। मैत्रेयी जी ने स्त्री–पुरुष को आधार बना कर इन समस्याओं की चर्चा अपने उपन्यासों में की है।

शोध–प्रबन्ध के पंचम अध्याय **"मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ"** के अन्तर्गत मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार भारत विकास के रास्ते पर है। यहाँ के महानगर विदेशी नगरों के साथ होड़ करने में सक्षम हैं फिर भी भारत की आत्मा गाँवों में बसती है क्योंकि यथार्थ भारत की जिंदगी वहाँ पनपी है। इसलिए आज के कथा साहित्यकारों ने भी अपने लेखन की पृष्ठभूमि के लिए गाँव को चुना है। हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने समाज में फैली बुराइयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण समाज की स्त्री का आर्थिक विषमता के कारण अधिकाधिक शोषण होता गया है। अशिक्षित, विधवा तथा वृद्ध स्त्री अपने परिवार पर आर्थिक विपन्नता के कारण अधिक आश्रित रही है। इसलिए उसका शोषण भी अधिकाधिक होता गया है। उक्त अध्याय में मैत्रेयी जी के उपन्यास एवं कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्या का चित्रण किया गया है।

शोध–प्रबन्ध का षष्ठ अध्याय **मैत्रेयीपुष्पा के कथा साहित्य का शिल्प विधान (उपन्यास एवं कहानियों के संदर्भ में)** में शिल्पगत संवेदना के विविध आयामों का स्वतंत्र विवेचन–विश्लेषण किया है। कथा साहित्य का शिल्प विधान, कल्पना और यथार्थ के ताने–बाने से बुना हुआ होता है, जिसमें कथ्य, पात्र, परिवेश, कथोपकथन एवं सोद्देश्यता के तत्वों के साथ–साथ सांकेतिकता, संप्रेषणीयता की भावना भी सक्रिय होती रहती है। प्रत्येक रचनाकार अपनी इच्छित विषयवस्तु के संप्रेषण हेतु विभिन्न शैली–रूपों का इस्तेमाल कर लेता है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में आत्मकथात्मक शैली, इतिवृत्तात्मक शैली, विवेचन शैली व्यंग्यात्मक शैली एवं सांकेतिक शैली, वार्तालाप एवं संवाद शैली, वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली आदि के दर्शन होते हैं। जिसका यथासंभव विश्लेषण किया गया है। अपनी रचना में रचनाकार या तो नितांत नई भाषा गढ़ता है, जो भाव–संप्रेषण के लिए उपयुक्त हो। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य के केन्द्र में बुन्देलखण्ड, ब्रज प्रदेश होने के कारण उन्होंने वहाँ की भाषा का प्रयोग किया है। जनवाणी पर सहज असामान्य अधिकार होने के कारण वह कथानक और

परिवेश को सजीव बनाती है। जहाँ–जहाँ शहरी वातावरण से युक्त कहानी या उपन्यास है वहाँ लेखिका ने उस परिवेश की भाषा का समर्थ प्रयोग किया है।

शोध–प्रबन्ध में **"उपसंहार"** के माध्यम से शोध–प्रबन्ध का सार प्रस्तुत किया गया है।

शोध के अन्त में संदर्भ ग्रन्थ सूची को सम्मिलित किया गया है।

सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध के निष्कर्षो को लेकर वाद–विवाद संवाद की स्थितियाँ सदैव बनती रहती है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के सोचने समझने और विवेचन की दृष्टि अलग होती है। अतः भविष्य में वाद–विवाद और संवादों की श्रृंखला में इन निष्कर्षो और अवधारणाओं को सम्मिलित किया जाय और महत्व दिया जाय तो मैं अपने इस लघु प्रयास को सार्थक मान सकूंगा।

7. मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य का समग्र प्रभाव–

मैत्रेयी पुष्पा बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक में तेजी से उभर कर संपूर्ण हिन्दी साहित्यिक परिदृश्य पर छा जाने वाली प्रमुख उपन्यासकार की श्रेणी में आती है। उनकी प्रतिभा बहुयामी है और उनका रचना साहित्य विस्तृत है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों को स्त्री जीवन का प्रतिबिंब कहा जाता है। प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज में जो कुछ देखता है उसे ही कल्पना का सहारा लेकर साहित्यिक रूप देता है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी अपने परिवेश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखा समझा और जीवन के सभी घटनाओं को विशेषकर स्त्री जीवन से जुड़ी समस्याओं का वर्णन बड़ी ही कुशलतापूर्वक अपने साहित्य में किया। मैत्रेयी पुष्पा का जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता है। इसलिए उन्होंने ग्रामीण जीवन और उसकी व्यवस्थाओं की गहराई में उतरकर ग्रामीण जीवन के अछूते आयामों से हिंदी साहित्य के पाठकों को परिचित कराया। उनके लेख में सूक्ष्मता और अनुभूति की गंभीरता विद्यमान है। उन्होंने स्त्री जीवन की समस्याओं को बेबाकी एवं स्पष्ट बयानी के साथ वर्णन किया है। अपने बेबाकी के कारण वे विवाद स्पंद भी बनी रही साथ ही उन्हें यौन शोषण एवं स्वछंददेह विलास के प्रसंगों को तीव्रता देने वाला साहित्यकार कहा गया। बचपन में वे स्वयं यौन शोषण की शिकार रह चुकी हैं इसलिए उनकी रचनाओं में यौन शोषण की प्रमुखता दिखाई पड़ती

है। इनकी रचनाओं की स्त्री पात्र मर्यादा, परंपरा और रूढ़ियों के बंधन में बंधी है एवं उससे मुक्ति चाहती है। उन्होंने स्त्री पात्रों के माध्यम से पितृसत्तात्मक द्वारा स्त्री शोषण के लिए बनाए गए पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़ा है।

8. निष्कर्ष–

समकालीन कथा लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने हिन्दी साहित्य अनेक विधाओं में अपनी लेखन प्रतिभा का लोहा मनवाया है। मैत्रेयी पुष्पा भारत की ऐसी महिला है जिन्होंने अपनी कहानियों में हर कोण से गाँव की स्त्रियों की कहानी लिखी है। इन्होंने ग्रामीण स्त्रियों एवं ग्रामीण समाज की समस्या को प्रमुखता से उठायीं है। स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात भारतीय जन–मानस में एक खुशी की लहर हिलोर ले रही थी कि अब उनकी सरकार होगी, अपना कानून होगा, चारों तरफ समता के मूल्यों का विकास होगा हम स्वतंत्र हो गये यह भारतीय जनता के लिए एक स्वप्न मात्र था। आजाद भारत में अपनी सरकार, अपने नेता और सरकारी कर्मचारी आम जनता के शोषण में जी जान से लग गये। भारतीय गरीब मजदूर तथा छोटे–छोटे किसान बड़ी तीव्रता से मजदूर में तब्दील हो गये। शिक्षा, स्वास्थ्य व अपने अधिकार से लोग वंचित थे शोषक वर्ग के नये–नये रूप गाँव में कैसे उभरते है इसका ज्ञान मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य को पढ़ने के पश्चात होता है।

9. पुस्तकालय एवं शोध संस्थानः–

1. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, हंसा मेहता पुस्तकालय
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन पुस्तकालय, प्रयागराज

10. संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार – दिनांक 14–08–2015 पर आधारित।
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – अप्रैल 2006 –गोपाल राय – पृष्ठ 387
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – नवम्बर 2007 –गोपाल राय – पृष्ठ 88

4. औरत अस्तित्त्व और अस्मिता – जून 208 –अरविन्द कुमार जैन – पृष्ठ 101
5. आदमी की निगाह में औरत – मई 2012 – राजेन्द्र यादव – पृष्ठ 242
6. 'हंस' पत्रिका – जून 1994 – डॉ0 प्रभा खेतान द्वारा लिखित आलेख – पृष्ठ 65
7. 'हंस' पत्रिका – दिसम्बर 2000–प्रेम कुमार मणि द्वारा लिखित आलेख – पृष्ठ 77
8. समकालीन साहित्य चिन्तन – डॉ0 रामदरश मिश्र, डॉ0 महीप सिंह – पृष्ठ 103
9. 'हंस' पत्रिका – सितम्बर 1998 – वीरेन्द्र यादव द्वारा लिखित आलेख – पृष्ठ 98
10. 'हंस' पत्रिका – अगस्त 1996 – अजित कुमार द्वारा लिखित आलेख– पृष्ठ 83

11. सहायक संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- विजय बहादुर सिंह– मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने कथा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
- डॉ0 सुमा वी0 राव–मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना, लोक प्रकाशन, गृह, दिल्ली, 2010
- अरविन्द जैन–औरत अस्तिव और अस्मिता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
- डॉ0 कल्पना पटेल–मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्ति समाज, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2014
- मैत्रेयी पुष्पा–मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- डॉ0 उषा यादव–हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
- राजेन्द्र यादव–उपन्यास : स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
- सं0 दया दिक्षित–मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, सामायिक बुक्स, नई दिल्ली, 2013
- डॉ0 शोभा यशवंते–मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2009
- प्रभा खेतान– उपनिवेश में स्त्री : मुक्तिकामना की दसवार्ताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003

12 पत्रिकाएं–

1. यादव राजेंद्र, हंस, नई दिल्ली, अप्रैल 1998, अंक–18
2. यादव राजेंद्र, हंस, नई दिल्ली, अगस्त 2002, अंक–15
3. सिद्धार्थ सुनील, वसुधा, जनवरी–मार्च 2007
4. शोध दिशा– अप्रैल–जून 2012 बिजनौर, उत्तर प्रदेश